ORIGINAL RESEARCH PAPER

Geography

KEY WORDS: लिंगानुपात, शिशुलिंगानुपात, शिशुहत्या, कारण और प्रभाव

मध्यप्रदेश में घटता हुआ शिशु लिंगानुपात : एक स्थानिक विश्लेषण (2001 – 2011)

शिवानी गुप्ता शोद्यार्थी भूगोल जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

ABSTRACT

This Unique research is a milestone for other research to for the problem of rapid decline rate in child sex Ratio in Madhya Pradesh. All the causes, supporting factors, Secondary data are covered to make the research more important and reliable and tried to give an appropriate solution. It explores the area of human behavior to understand closely.

प्रस्तावना :– किसी भी देश की जनसंख्या उसकी वास्तविक संसाधन होती है, जनसंख्या के आकार, संरचना, लिंगानुपात इत्यादि के आधार पर किसी भी भागौलिक क्षेत्र के लिए नीति का निर्माण ओर विभिन्न प्रकार का विश्लेषण किया जाता है। देश की जनसंख्या का अध्ययन जनांकिकी ;क्मउवहतंचीलद्ध कहलाता है, जिसमें विभिन्न आयु वर्ग की महिला और पुरूषों के समंको का अध्ययन कर पाया गया कि भारत में लिंगानुपात को 3 वर्गों में विभाजित किया गया है :–

1: **लिंगानुपात (Population Sex Ratio)** :– प्रति 1000 पुरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या।
2: **शिशु लिंगानुपात (Child Sex Ratio)** :– जन्म से लेकर 6 वर्ष के आयु वर्ग में प्रति 1000 बालकों की तुलना में इसी आयु वर्ग की बालिकाओं की संख्या।
3: **जन्म के समय लिंगानुपात (Sex Ratio at Birth)** रू. प्रति 1000 बालकों के जन्म पर बालिकाओं के जन्मों की संख्या को जन्म के समय लिंगानुपात कहा जाता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जनसंख्या का लिंगानुपात, समाज का आधारशिला है। लेकिन भारत जैसे विशाल देश के मध्य प्रदेश राज्य के 52 जिलों में लिंगानुपात में लगातार कमी दर्ज की गई है, जो कि चिंता का विषय है।

अध्ययन क्षेत्र :– भारत का हृदय प्रदेश नाम से प्रसिद्ध मध्य प्रदेश राज्य की भौगोलिक स्थिति 21°6′ उत्तरी अक्षांश से 26°30′ उत्तरी अक्षांश तथा 74°9′ पूर्वी देशांतर से 82°48′ पूर्वी देशांतर के मध्य में है। प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 3,08,252 वर्ग कि.मी है जोकि भारत के कुल क्षेत्रफल का 9.38% है। म.प्र. की कुल संख्या 7,26,26,809 है जिसमें पुरूषों की संख्या 3,76,12,306 (51.79%) और महिलाओं की संख्या 3,50,14,503 (48.21%) है। यहाँ की जलवायु सामान्यतः मानसूनी प्रकार की है। मध्यप्रदेश को कुल 52 जिलो में विभक्त किया गया है। जिसकी राजधानी भोपाल है।[1]

शोध समस्या :– मध्यप्रदेश राज्य की जनसंख्या का अध्ययन किया गया तो पाया कि जनांकिकी 2011 में शिशु लिंगानुपात 2001 की तुलना में घटता जा रहा है। और यह घटकर 932 से 912 पर पहुंच गया है जो कि एक चिंता का विषय है जिससे सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन आया। मैने अपने शोध पत्र के माध्यम से इस सामाजिक समस्या पर दृष्टि डालने का प्रयास कर इसके कारण और निवारण को प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

विधि तंत्र :– शोध पत्र में प्राथमिक और द्वितीयक समंको का उपयोग किया गया। प्राथमिक समंक के रूप में विभिन्न लोगों से वार्ता और साक्षात्कार को शामिल किया जबकि द्वितीय समंक के रूप में संयुक्त राष्ट्र बाल कोष से मध्यप्रदेश के 52 जिलो के शिशु लिंगानुपात के समंको को प्राप्त कर विश्लेषण किया गया।

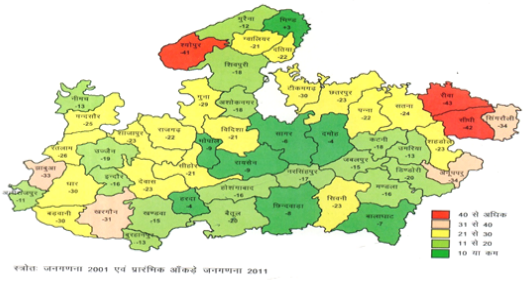

स्त्रोत: जनगणना 2001 एवं प्रारंभिक आँकड़े जनगणना 2011

म.प्र. राज्य में घटता हुआ लिंगानुपात :– भारत की जनगणना 2001 के अनुसार भारत में शिशु लिंगानुपात 927 दर्ज किया गया था जबकि सन् 2011 की जनगणना में शिशु लिंगानुपात अब तक सबसे नीचे के स्तर पर पहुंच कर 914 हो गया जिसमें 13 बिन्दु की गिरावट दर्ज की गई जो कि एक खतरनाक स्थिति है। भारत के कुछ राज्यों जैसे हरियाणा (830), पंजाब (846), जम्मू और कश्मीर (859) में शिशु लिंगानुपात सबसे कम पाया गया है।

इसी प्रकार मध्यप्रदेश की जनगणना 2001 और 2011 के अध्ययन में पाया की मध्यप्रदेश राज्य का लिंगानुपात 2001 और 2011 के बीच 20 बिंदु गिरकर 932 से 912 पहुंच गया जिसका अर्थ है कि 2011 में प्रति 1000 बालकों पर बालिकाओं की संख्या 912 रह गयी। म.प्र. के 52 जिलों में भी यह गिरावट दर्ज की गई, साथ ही साथ है जिले अनुसार अध्ययन निम्नलिखित है :–

1: म.प्र. में कुल 18 जिलों में शिशु लिंगानुपात सामान्य शिशु लिंगानुपात 912 से कम अंकित किया गया जबकि भिण्ड ऐसा एक मात्र जिला है जिसमें लिंगानुपात सबसे कम होने के बावजूद जनगणना 2001 को अनुसार 3 बिन्दु की वृद्धि दर्ज की गई जो कि 832 से 835 तक पहुंच गया।
2: म.प्र. के मुरैना (825) ग्वालियर (832) भिण्ड (835) ऐसे जिले है जिनका शिशु लिंगानुपात औसत शिशु लिंगानुपात से निम्न होने के साथ ही राज्य में शिशु लिंगानुपात सबसे कम है।
3: मध्य प्रदेश में पिछले दशक में शिशु लिंगानुपात में सर्वाधिक गिरावट रीवा में 43 बिन्दु के साथ दर्ज की गई। रीवा में 2001 में शिशु लिंगानुपात 926 था जो कि 2011 में घटकर 883 पर पहुंच गया।
4: सबसे कम गिरावट हरदा में दर्ज की गई जो कि 925 से 4 बिन्दु गिरकर 921 पर स्थिर है। इतना ही नही प्रदेश में अधिकांश गिरावट आदिवासी बाहुल जिलों में आई।[2]

शिशु लिंगानुपात में गिरावट निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित है :–

घटता हुआ शिशु लिंगानुपात जिले के अनुसार (घटते क्रम में)

Sr.No.	District	2011	2001	Changes in CSR
1.	Rewa	883	926	-43
2.	Sidhi	910	952	-42
3.	Sheopur	888	929	-41
4.	Singrauli	921	955	-34
5.	Anuppur	943	977	-34
6.	Jhabua	934	967	-33
7.	Khargon	931	962	-31
8.	Tikamgrah	896	916	-30
9.	Badwani	940	970	-30
10.	Dhar	913	943	-30
11.	Guna	901	930	-29
12	Ratlam	931	957	-26
13.	Mandsaur	921	946	-25
14	Satna	907	931	-24
15.	Dewas	907	930	-23
16.	Chhatarpur	894	917	-23
17.	Seoni	954	977	-23
18.	Shahdol	946	969	-23
19.	Sajapur	913	936	-23
20.	Rajgarh	916	938	-22
21.	Patna	910	932	-22
22.	Datia	852	874	-22
23.	Gwalior	832	853	-21
24.	Vidisha	922	943	-21
25.	Sihore	906	927	-21
26.	Baitul	949	969	-21
27.	Dindori	970	990	-20
28.	Ujjain	919	938	-19
29.	Shivpuri	889	907	-18
30.	Ashok Nagar	914	932	-18
31.	Katni	934	952	-18
32.	Narshinghpur	900	917	-17
33.	Indore	892	908	-16
34.	Hoshangabad	911	927	-16
35.	Mandla	965	981	-16
36.	Khandwa	931	946	-15
37.	Jabalpur	916	931	-15
38.	Umaria	946	957	-13
39.	Neemach	918	931	-13
40.	Burhanpur	921	934	-13

41.	Morena	825	837	-12
42.	Alirajpur	971	982	-11
43.	Bhopal	916	925	-9
44.	Raisen	927	936	-9
45.	Chhindwada	950	958	-8
46.	Balaghat	962	968	-7
47.	Sagar	925	931	-6
48.	Damoh	931	935	-4
49.	Harda	921	925	-4
50.	Bhind	835	832	+3

स्रोत :– संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष

कारण :– मध्यप्रदेश, भारत का प्रगतिशील राज्य होने के बावजूद यहाँ पर शिशुलिंगानुपात में लगातार गिरावट दर्ज की गई जिसके मुख्य कारण निम्नलिखित है :–

1: पैत्रिक समाज में महिलाओं के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार और निम्न स्तर होने के कारण परिवार में बालक के खाना–पीना और पालन पोषण पर बालिकाओं की अपेक्षा ज्यादा ध्यान दिया जाता है जिससे कभी–कभी बालिकाओं कुपोषित एवं अन्य बीमारियों से ग्रसित हो जाती है और वे उचित देखभाल ना मिलने के कारण मृत्यु के गर्त में चली जाती है।
2: बालक की चाह शिशु लिंगानुपात के घटने के मुख्य कारण प्रतीत होता है।
3: समाज में प्रचलित विभिन्न प्रकार की प्रथायें जैसे– दहेज, सामाजिक असुरक्षा की भावना के कारण बालिका बोझ लगने लगती है परिणाम स्वरूप बालिका शिशु की हत्या कर दी जाती है।
4: आज प्रत्येक व्यक्ति छोटा परिवार चाहता है ओर जिसमें भी यदि दंपत्ति का पहला बच्चा बालक जन्म ले लेता है तो फिर वह दूसरे बच्चा या कह सकते है बालिका को पैदा नही करता है जिससे शिशु लिंगानुपात घट रहा है।
5: लिंग चयन प्रतिषेध कानून का उचित तरीके से लागू न होना भी एक कारण है।

प्रभाव :– शिशु लिंगानुपात में गिरावट होने से संपूर्ण सामाजिक संरचना अस्त व्यस्त हो जाती है जिससे प्रभाव निम्न है :–

1: महिलाओं के प्रति हिंसा में वृद्धि होती जाती है।
2: शिशु लिंगानुपात घटने से महिलाओं की संख्या में कमी होती जाती है जिससे शादी ब्याह और व्यापार के लिए लड़कियो की खरीद फरोख्त होने लगती है।
3: बढ़ते हुए दुराचार, बलात्कार बहुविवाह प्रथा से महिलाओ/लड़कियो के मन मस्तिष्क में पुरूषों के प्रति द्वेष भावना पनपने लगती है जिससे समाज में समरसता को खतरा पैदा होता जा रहा है।
4: महिलाओ/लड़कियो के साथ यौन उत्पीड़न होने से यौन संचारित बीमारियों जैसे– एड्स आदि में वृद्धि हो रही है।
5: समाज महिलाओं को लेकर असुरक्षित महसूस करता है जिससे महिलाओं/लड़कियो के प्रति अति संवेदनशीलता बढ़ रही है। परिणामस्वरूप लड़कियां अशिक्षित रह जाती है।

घटते हुए लिंगानुपात को रोकने के उपाय :–

1: परिवार प्राथमिक ईकाई है जिसके द्वारा किसी भी प्रकार की समस्या का निवारण संभव है। अतः घटते हुए लिंगानुपात को रोकने के लिए परिवारों के लिए सेमिनार का आयोजन करना चाहिए जिससे वे बेटे की चाह, लड़कियाँ बोझ होती है इत्यादि की सोच से ऊपर उठकर समानता के लिए कार्य कर सके।
2: समाज की 40 वर्ष और उससे अधिक उम्र की महिलाओं के लिए अलग–अलग प्रशिक्षण और वर्कशॉप आयोजित करायी जाये जिससे वे समाज में लड़कियों के प्रति नजरिये को बदल सके।
3: सरकार के द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं से समाज को परिचित कराना चाहिए ताकि वे योजनाओं का लाभ देकर लड़का–लड़की भेद को खत्म कर सके।
4: सरकार के द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम और विभिन्न प्रकार के लाभों को वास्तव में लोगो तक पहुंचाये न कि सिर्फ कागजाती रूप में चलाये और इस प्रकार की योजनाओं में कार्यरत कर्मचारी चाहे तो अपने प्रयास से सामाजिक परिदृश्य को बदल सकता है।
5: बेटो की तरह बेटियों का भी जन्म होने पर ब्अपस त्महपेजतंजपवद लेजमउ में पंजीकरण कराये।
6: सोनोग्राफी केन्द्रो पर लगातार निरीक्षण किया जाये साथ ही गैर सरकारी संगठनों को भी इससे जोड़ा जाये ताकि वे जनजागरूकता का काम कर सके।

अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि केवल सरकार के द्वारा किये गए प्रयास ही घटते हुए लिंगानुपात को रोकने में पर्याप्त नहीं होगे बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को आगे बढ़कर इसमें भागीदार बनना होगा और लड़कियो को मान सम्मान, अधिकार और सशक्त बनाना होगा। गांधी जी के अनुसार – '' जब तक लड़की के जन्म का स्वागत लड़के की तरह नही किया जाएगा तब तक हमें मान लेना चाहिए भारत आंशिक अपंगता से पीड़ित रहेगा।'' के कथन को अपनाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1: https://www.samanyagyanhindi.com
2: संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की पुस्तिका।
3: भारत की जनगणना, 2001 – 2011।
4: Krishana Moorthi Shrinivasan, Population, concern in India.